

कृष्णजन्म'क रचयिता मनबोध : एक नब अनुशीलन

डा. विजयेन्द्र झा¹, डा. राधा कुमारी²

¹अध्यक्ष, मैथिली विभाग, ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

²अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पुर्णिया विश्वविद्यालय पुर्णिया, बिहार, भारत

सारांश- महाकवि विद्यापतिक 'देसिल बयना'क पश्चात् मैथिली साहित्यक सम्पूर्ण आदिकाल आ' मध्यकालक भाषा, हर्षनाथ झा धरि, क्रमशः संस्कृतनिष्ठ होइत गेल, तकर मूल करण छल मैथिली साहित्यक रचनाकारलोकनि संस्कृतक विद्वान् होइत छलाह, जकर प्रभाव हुनकालोकनिक साहित्यपर परब स्वाभाविक छल। मनबोध एहि परम्पराकें तोडि मैथिली साहित्यमे एकटा क्रान्तिकारी परिवर्तन अनलनि। ओ मिथिलाक विशुद्ध गमैया भाषाक प्रयोग कएलनि, पूर्वक शृंगारिक परम्पराकें वात्सल्य रससँ सराबोर कएलनि। कृष्णक बाल स्वरूपक चित्रांकन करैत ठाम-ठाम हुनक अलौकिक प्रभावकें रेखांकित करैत अपन उपास्य कृष्णक प्रति असीम भक्तिभावाभिव्यक्त कएलनि। कृष्णक जन्म पापी कंश आ' जरासंधक समग्र नाशे भेलापर साफल्य भेल। मनबोधक कृष्णजन्म एकटा एहन प्रबंधकाव्य थिक जे मैथिली साहित्यक मध्यकाल आ'आधुनिक कालक बीच सेतु थिक। भाषा-शैली, शब्द-विन्याह, मोहाबरा-लोकोक्तिक प्रयोग आ' एकटा नबीन दृष्टिक भावक कारणेँ कृष्णजन्म अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति अछि। प्रस्तुत आलेखमे कृष्णजन्मक रचयिता मनबोधक प्रति एकटा नबीन दृष्टि उपस्थित करैत अछि जे पूर्वक विद्वान् लोकनिक मतकें सप्रमाण खण्डित करैछ। सर्वेकत्वेन मनबोधक कृष्णजन्म एकटा अनुपम कृति थिक।

बीज-शब्द: आक्रमण, कथाकाव्य, कृष्णजन्म, क्रान्तिकारी, गमैया, छन्द-विधान, मनबोध, महाकाव्य, मंगलाचरण, मूलग्राम, प्रख्यात, वंशधरलोकनि, वात्सल्य, राजनीतिक, शास्त्रीय-लक्षण.

प्रस्तावना

मानव हृदयक भावक अभिव्यक्ति गीत वा कविता द्वारा होइत अछि, एहिना मानव उत्सुकताक पूर्ति कथा द्वारा होइत अछि। तँ सभ्यताक आरम्भहिसँ मनुक्खक प्रवृत्ति कथा दिस रहल अछि। विश्वक समस्त साहित्यमे, कथाकाव्यहिक निर्माण भेल अछि, जाहिमे ओहि जातिक वीरगाथा वा पछाति प्रेमगाथाक निबंधन भेल आ' पश्चात् इएह वीरगाथा आ' प्रेमगाथासब कालक्रमे ओहि जातिक आदि महाकाव्यक रूपमे सिद्ध भेल। एहिना पाश्चात्य मनीषी होमर (9म -8म शताब्दी ईसा पूर्व)क "इलिएट" आ' हमरालोकनिक "रामायण", "महाभारत" आदि ग्रन्थसब रचल गेल। जँ मैथिली साहित्यक प्रसंग बात करी तँ एहिमे पहिल महाकाव्य मनबोध (1744-1788)क "कृष्णजन्म"क नाम लेल जाए सकैछ। कृष्णजन्मसँ पूर्व मैथिलीमे रतिपति भगत (18म सदीक उत्तरार्द्ध) पहिल कथाकाव्य 'गीतगोविन्द'क रचना कएने छलाह; जकर प्रकाशन परमानन्द झा द्वारा 1958 ई. मे 'बिहार रिसर्च सोसाइटीक जर्नल' मे भेल छल। कथाकाव्य परम्पराक दोसर महत्वपूर्ण कवि छथि 'मनबोध'। 18म शताब्दीक कविलोकनिमे

हिनक महत्वपूर्ण स्थान छनि। मध्यकालमे मौलिक प्रबंधकाव्य रचनाक अभावे जकाँ देखाइत अछि, तथापि कविश्वर मनबोध एहि दिशामे महत्वपूर्ण योगदान देने छथि। एहि कालखण्डमे एहि प्रवृत्तिक मात्र इएह दू गोटा पोथी- "गीतगोविन्द" आ "कृष्णजन्म" उपलब्ध होइछ। मनबोधक "कृष्णजन्म" एहि कालक मैथिली साहित्यक एकटा अनुपम उपलब्धि थिक। महाकाव्यक कतिपय शास्त्रीय लक्षणसँ समन्वित एहि काव्यक रचना क' मनबोध सर्वप्रथम ई सिद्ध क' देलनि जे मैथिलीमे प्रवाहपूर्ण शैलीमे जनसाधारणक बोधगम्य भाषामे महाकाव्यक रचना सेहो कएल जाए सकैछ। कोनो महाकाव्यक सफलता मात्र सर्ग-संख्या, छन्द-विधान, मंगलाचरण आ' प्रकृति-वर्णन आदिसँ संबंधित स्थूल शास्त्रीय लक्षणक निर्वाहमे नहि, अपितु कथानकक व्यापकता एवं धारावाहिकता, चरित्रांकनक कुशलता, रसक परिपाक, दृश्य-चित्रणक मनोरमता, जातीय संस्कृति एवं आचार व्यवहारक अभिव्यक्ति तथा भाषा-शैलीक विशदतापर सेहो निर्भर करैछ। एहि सभ दृष्टिँ मनबोधक "कृष्णजन्म" सफल अछि आ' एकरा मैथिलीमे "कृष्णकाव्य" परम्पराक सर्वप्रथम महाकाव्य कहल ज सकैछ।¹

18म सदीमे जहिना भारतीय राजनीतिक आ' सामाजिक परिस्थितिमे परिवर्तन भेल, ओहिना महाकवि मनबोध अपन क्रान्तिकारी भावबोध आ' शिल्प रूपक संग मैथिली साहित्यक इतिहासमे पदार्पण करैत छथि। मनबोध मध्यकालीन वर्गीय काव्य-परम्पराक विपरीत पुनः जनकाव्य परम्परा ठाढ़ करबाक चेष्टा कएलनि। मिथिलाक भूगोल सतत मिथिलाक राजनीतिक ओ सामाजिक जीवनमे सामान्यतः स्थिरता अनैत एकरा शान्तिपूर्ण क्षेत्र बनओने रहल। इएह कारण छल जे 17म शताब्दी धरि मिथिलामे वैदिक परम्परा ओ सांस्कृतिक जीवनमे

कोनो विशेष परिवर्तन नहि आबि सकल। मुदा, 18म सदीक पश्चात् एतए विजातीय सांस्कृतिक आक्रमण प्रारंभ भ' गेल। साहित्यमे सेहो ओकर प्रमाण भेटैछ; जेना- वैष्णव भक्ति, संतमत आ' पारसी थियेटरक प्रभावसँ कीर्तनिया नाट्यमंचक हास आदि। साहित्यमे जखन कोनो परंपरा रूढ़ि भ' जाइछ तँ प्रतिक्रियामे विद्रोह आरम्भ भ' जाइछ। मैथिली साहित्यमे मनबोध ओहने विद्रोही स्वर ल' केँ उपस्थित होइत छथि।²

मनबोध: सामान्य परिचय

मनबोधक परिचय अद्यावधि एकटा पहेली बनि गेल अछि। मैथिली साहित्यमे अनेक मनबोध नामधारी साहित्यकार भेलाह। तँ "कृष्णजन्म"क रचनाकार कोन मनबोध छथि तकर यथार्थ निर्णय अद्यावधि नहि भ' सकल अछि। सभ विद्वानलोकनि अपन-अपन तर्कसँ ई सिद्ध करबाक प्रयास कएलनि अछि जे हुनका द्वारा कहल गेल नामधारी मनबोधे 'कृष्णजन्म'क रचनाकार छथि। अद्यावधि मनबोधक प्रसंग डा. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, बुकनन, म. म. उमेश मिश्र, प्रो. रमानाथ झा, प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' आदि विद्वान् लोकनि अपन-अपन अभिमत रखलन्हि अछि। द्रष्टव्य थिक उक्त विद्वान् लोकनि द्वारा मनबोधक परिचय:

महामहोपाध्याय उमेश मिश्र मंगरौनी गामक पलिवार जमदौली मूल ग्रामक ज्योतिषी सोनमणि झाक बालक ज्योतिषी मनबोध झाकेँ "कृष्णजन्म"क रचयिता मानैत छथि। पंजीमे एहि मनबोध झाक वंशावली एहि प्रकारेँ अछि- बीजी पुरुष- कपिलदेव (1), सोमदेव (2), बासुदेव (3), आदिदेव (4), भृगु (5), महेश्वर (6), कीर्त्तू (7), नादू (8), चन्दकर (9)। एहि चन्दकरसँ दू गोटा शाखा फूटल- प्रीतिकर आ' म. म.

शुचिकर। म. म. सुचिकर (10), गंगाधर (11), म. म. हलधर (12), प्राणधर (13), शुभंकर (14), गोन्दू (15), धनपति (16), धारू (17), श्रीनाथ (18) चीकू प्रख्यात रूपनाथ (19) ज्यो. कुमुदानन्द (20), ज्यो. सोनमणि (21) आ' ज्योतिषी मनबोध झा (22)। महामहोपाध्याय उमेश मिश्र एही मनबोधकें 'कृष्णजन्म' कथाकाव्यक रचयिता मानैत छथि।³ ध्यातव्य जे प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' हिनकहि प्रसिद्ध 'कृष्णजन्म'क रचयिता मानैत छथि। मुदा, उमेश मिश्र 'कृष्णजन्म' पोथीक रचयिताक प्रसंग डा. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनक अभिमतकें आधार मानि जाहि मनबोधक परिचय देलनि अछि, ओ स्वयंकेर उपर देल गेल परिचयसँ भिन्न कोनो आन्य नामधारी मनबोध छथि, जे पगुलवाड बढिआम मूलक जमसम निवासी चान झाक बालक भोलन झा छथि। ई भोलन हिनक नामान्तर छलनि। पंजी पोथीकें खँघाहारलाक बाद हिनक 19 पीढ़ीक विवरण एहि प्रकारें अछि- बीजी पुरुष- गंगाधर { गंगौलिवार-पगुलवाड, (1)}, वीर (2), देवधर (3), आदिदेव (4), विकर्ण (5), वाचस्पति (6), बापट (7), जगद्धर (8), दिवाकर (9), सुमन (10), देवदत्त (11), सद्गु वा शिवदत्त (12); एहि शिवदत्त लगसँ आठ गोट शाखा फुटैत अछि- (क) रविदत्त, रामदत्त, रुचिदत्त आ' शुभदत्त तथा (ख) भानुदत्त, कृष्णदत्त, हरदत्त आ' रूपदत्त; जाहिमे संतैसर रुचिदत्त (13) 'भोलन'क शाखाक छलाह। रुचिदत्तक पश्चात् जानू (14), धर्मपति (15), लखाई (16), मनोहर (17) चान झा (18) आ' कवि भोलन प्रख्यात लक्ष्मीकान्त (19) पीढ़ीमे पडैत छथि।⁴

तेसर अभिमत प्रो. रमानाथ झा जे देलनि जाहिमे नरौरै मलिछाम मूलक जटेश्वर झाक बालक 'कृष्णजन्म' पोथीक रचनाकार 'मनबोध' कें कहल गेल अछि। पंजी पुस्तिकामे एहि 'मनबोध'क वंशावली

अग्रलिखित अछि- बीजी पुरुष- महिधर (1), श्रीधर (2), उदाकर (3), रत्नाकर (4), भक्तिकर (5), हरिशर्म (6), प्रतशर्म (7), डालू (8), मधुकर (9), रुचिकर (10), सुधाकर (11), रतनू (12) एहि रतनूसँ तीनटा शाखा फुटल-- (क) सूपे आ' गोपाल तथा (ख) दामोदर। इएह सूपे झा (13) मनबोधक वंशधर छलाह। सूपे झाक पश्चात् श्रीधर (14), मधुसूदन (15), भवदेव (16), जटेश (17) आ' पौराणिक मनबोध (18), जनिका प्रो. रमानाथ झा 'कृष्णजन्म'क रचनाकार मानैत छथि।⁵

एमहर हालहिमे प्रो. जयानन्द मिश्र 'पंजीकार' पंजी-पोथीकें खँघारि ई सिद्ध करबाक प्रयास कएलनि अछि जे उपर्युक्त वर्णित तीनू 'मनबोध' नामधारी व्यक्तिमे सँ एकहुँटा कृष्णजन्मक रचनाकार नहि छथि। एसि प्रसंग प्रो. मिश्र लिखैत छथि- "पंजी-पोथीमे करमहे रुचौल मूलग्रामक रामेश्वर झाक बालक म. म. मनबोध उर्फ लक्ष्मीदत्त झा सेहो भेटैत छथि। कालक गणनासँ स्पष्ट होइछ जे महामहो मनबोध झा महाराज नरेन्द्र सिंह (1744-1761)क समय शासनारूढ भेल छलाह। म. म. मनबोध झा महाराज माधव सिंहक प्रथम विवाहक ससुर छलथिन। महाराज माधव सिंह अर्थात् हुनक ससुर पचास वर्ष अवश्य जेठ छल होयताह। तँ करमहे मूल ग्रामक म. म. मनबोध झा महाराज नरेन्द्र सिंहक समयमे छलाह आ' इएह कृष्णजन्म महाकाव्यक रचना कएलनि।"⁶

प्रायः मैथिली साहित्यक अधिकांश विद्वान् ई स्थापित क' चुकल छथि जे महाराज नरेन्द्र सिंह (1744-1761)क समकालीन जे मनबोध छलाह ओएह कृष्णजन्मक रचनाकार छलाह। ग्रियर्सन सेहो मनबोधक मृत्यु 1788 ई. मानैत छथि। इहो तिथि सिद्ध करैत अछि जे मनबोध महाराज नरेन्द्र सिंहक समकालीन छलाह। संगहि कवि मनबोध महाराज नरेन्द्र सिंहक दरबारी

कवि छलाह सेहो मनबोध द्वारा रचित स्वयं केर निम्न
कवितासँ स्पष्ट भ' जाइछ, जे द्रष्टव्य थिक-

” दए बसवास सखो गन राख।

प्राण पाहुन सन जाएब भाख।

मन मुनि मनबोध कवि इहो गाब।

नृपति नरेन्द्रसिंह बुझू भाव।⁷

उपर्युक्त पद सेहो एही करमहे रुचौल ग्रामक महामहो
मनबोध झासँ संबद्ध अछि। तँ ई तथ्य पूर्णतः सत्य
प्रतीत होइछ जे इएह म. म. मनबोध प्रसिद्ध आ'
लोकप्रिय 'कृष्णजन्म' पोथीक रचनाकार छथि, ने कि
उपर्युक्त अन्य विद्वान् लोकनि द्वारा गनाओल गेल
मनबोध नामधारी व्यक्ति छथि। करमहे रुचौल
मूलग्रामक उपर्युक्त म. म. मनबोध झाक वंशावली
पंजी-पुस्तिकामे एहि प्रकारें अछि-

करमहे मूलक ज्ञात बीजी पुरुष-वंशधर(1), म. हरिकेश
(2), म. रुचिकर(3), गिरिवर (4), गंगेश (5); एहि
गंगेशसँ दू गोटा शाखा फुटल- बराह आ' श्रीवत्स। इएह
बराह (6) करमहे रुचौल मूल-ग्रामक महामहो मनबोध
उर्फ लक्ष्मीदत्त झाक पूर्वज छलाह। बराहक बाद देव
(7), दूबन (8), लक्ष्मीधर (9), नारायण (10), बल्ली
(11), नरोत्तम (12), रमेश्वर (13), महामहो मनबोध
प्रख्यात लक्ष्मीदत्त झा (14) भेलाह, जे कृष्णजन्मक
प्रणेता छथि। एहि मूलग्रामक परवर्ती
वंशधरलोकनिक प्रसंग सेहो पंजी-पोथीमे उद्धृत
अछि, जाहिमे कृष्णदत्त (15), हेमदत्त प्रख्यात हरिनाथ
(16), नैयायिक कृष्णमाधव (17) आ' वर्तमानमे
अठारहम पीढ़ीपर राष्ट्रपति पुरस्कारसँ पुरस्कृत
करमहे बेहट मूलग्रामक डा. किशोरनाथ झा छथि।⁸

उपर्युक्त विद्वान् लोकनिक मंतव्यसँ एतवा तँ स्पष्ट
अछि जे मनबोधक प्रसंग परस्पर मतभिन्नता अछि।
मुदा, जाहि रूपें पंजी-पोथीकेँ खँघारि पंजीकार प्रो.

जयानन्द मिश्र अपन पक्ष रखलनि अछि, ओ
तुलनात्मक रूपें विशेष प्रमाणिक बुझाइत अछि।
मुदा, कृष्णजन्म' रचयिता वास्तविक मनबोधक प्रसंग
जा धरि आन कोनो प्रमाणिक तथ्य समक्ष नहि अबैत
अछि ता' प्रो. जयानन्द मिश्रहिक प्रमाणकेँ प्रमाणिक
मानि कृष्णजन्मक रचनाकारक रूपमे करमहे मूलक
प्रख्यात लक्ष्मीदत्त झा उर्फ म. म. मनबोध झाकेँ एकर
रचनाकार मानबे उचित होयत।

कृष्णजन्म

मैथिली साहित्य मध्य कृष्णावतार विषयक एकमात्र
महाकाव्य मनबोध झाक " कृष्णजन्म" छनि, संगहि जँ
एकरा मैथिलीक प्रथम महाकाव्य कहल जाए तँ कोनो
अतिशयोक्ति नहि। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन एकरा
'हरिवंश' कहैत छथि।⁹ ई 'कृष्णजन्म' वा 'हरिवंश' चारि
गोटा भिन्न-भिन्न विद्वान् द्वारा सम्पादित भेल अछि आ'
अद्यावधि एकर पाँच गोटा संस्करण उपलब्ध भ'
सकल अछि। कृष्णजन्मक कथा भागवत ओ हरिवंश
पुराणसँ लेल गेल अछि, जे एकहिटा छन्द "चौपाइ"
मे रचित अछि। मनबोधकृत 'कृष्णजन्म'पर हरिवंशक
प्रभाव ततेक प्रगाढ अछि जे अनेक विद्वान् एकर
मौलिकते पर संदेह व्यक्त करैत छथि। मुदा, एकर पद
ततेक ने रमनगर अछि आ' कथा तेहन छटाक संग
कहल गेल अछि जाहिसँ मौलिकताक स्वाद
पाठककेँ स्वतः भेटि जाइत छनि। उपलब्ध ग्रन्थ 18
अध्यायमे विभक्त अछि, मुदा 10म अध्यायक बाद
एहिमे ओ छटा आ' चमत्कार दृष्टिगत नहि होइछ।
जाहि हेतु मनबोध प्रसिद्ध छथि। एहि पोथीकेँ
मनबोध 'सर्ग' मे नहि बाँटि, अध्यायमे बाँटने छथि तँ
अनेक विद्वान् एकरा महाकाव्य नहि कहि, 'पौराणिक
कथाकाव्य' सएह कहैत छथि।¹⁰

મનબોધક 'કૃષ્ણજન્મ' એકટા આખ્યાન થિક જકર કથાનક ગોકુલ-મથુરા-દ્વારકાક પરિધિમે નચૈત-નચૈત આગાં બઢૈત અછિ। એહિમે કૃષ્ણક જન્મસં લ' પશ્ચાત્ કંશક બધ આ' તકરાબાદ જરાસંધક સંહાર ધરિ કથા સીમિત ભ' જાઇત અછિ। એહિ કાવ્યક નામ 'કૃષ્ણજન્મ અછિ, મુદા એકર સમસ્ત કથાનકકેં દેખબ તૈં કથા કૃષ્ણક જન્મે ધરિ સીમિત નહિ અછિ, તેં શીર્ષક ભ્રામક સન બુઝાઇત અછિ। એહિમે કૃષ્ણક બાલલીલાક સંગહિ કંશ આ' જરાસંધક બધ ધરિ કથા આગૂં બઢૈત અછિ। મુદા જૈં ઈ વિચાર કાલ જાએ જે કૃષ્ણક જન્મ કિએક ભેલનિ?તૈં શીર્ષક અસંગત નહિ બુઝાએત। જખન પૃથ્વીપર પાપક ઘૈલ ભરિ ગેલ તખન પાપીસભક અર્થાત્ કંશ આ' ઓકર અનુયાયીસભક સંહારક લેલ કૃષ્ણ અવતરિત ભેલાહ આ' સંહાર કાલનિ, આ' તખનહિ હુનક જન્મ સાર્થક ભેલ। મનબોધ એહિ ગ્રન્થમે અનેકઠામ શૃંગારિક અવસર અલેહું સંતાં શૃંગારિક ભાવકેં ઓ અતિ વિવેકસં છાંટિ દેલનિ અછિ આ' કામુકતાક આભાસ તક નહિ હોમય દેલનિ।

ઓના તૈં 'કૃષ્ણજન્મ' મે સુર, અસુર આ' યદુવંશક અનેક પાત્રક ચરચા ભેલ અછિ, મુદા પાઠકક ધ્યાન મુખ્ય રૂપેં કૃષ્ણ આ' કંશક ચરિત્રપર કેન્દ્રિત રહૈત અછિ। કુકર્મ, અત્યાચાર, દુરાચાર આ' અનાચારક પ્રતીક કંશ અછિ। એકર વિપરીત સદાચાર આ' ધર્મક પ્રતીક કંશ અછિ તથા અન્તતઃ કૃષ્ણ ઓહિ પાપાત્માક બધ ,પરિજન-પુરજન આ' સગા-સંબંધી સહિત ક' દૈત અછિ। કૃષ્ણ અસંભવ કાર્ય આ' અલૌકિક લીલા કાનિહાર અવતારી પુરુષ છલાહ, જનિક પ્રત્યેક કાર્ય આ' લીલામે દેવત્વક આભાસ ભેટૈત અછિ। મનબોધક કૃષ્ણ અંગ, બંગ આ' તૈલંગક રાજાસભક સંગહિ જરાસંધક બધ સેહો કરૈત અછિ આ' સંગહિ પુરુષોત્તમક આખ્યા સેહો પાબિ જાઇત અછિ। અપન કાવ્યમે પ્રબંધાત્મકતા આનબાક લેલ

મહાકવિ મનબોધ અપન પ્રતિપાદ્ય વિષયકેં લલિત, મધુર, આ' રોચક બનએબાક ઉદોશ્યે ઓકરા માનવક વૃત્ત- પ્રવૃત્તિક વર્ણનાત્મકતાસં આવૃત્ત કરબાક પ્રયાસ કરૈત અછિ। એહ કારણ અછિ જે મહાકાવ્યમે અનેક ઠામ વર્ણનાત્મક આયોજન કાલ ગેલ અછિ જાહિમે ગિરિકન્યા પાર્વતીક ચરણકમલક પ્રાર્થના, રાસલીલાક રાતિ, પ્રાત, સાંઝ, નદી આ' કંશક નિમંત્રણપર મથુરા જાએબાક ક્રમમે બ્રજસં મથુરા ધરિક યાત્રા-વર્ણન, સંયોગ આ' વિયોગક વર્ણન, પાવસ વર્ણન, કૃષ્ણક વિભિન્ન લીલાક વર્ણન, જરાસંધક સંગ યુદ્ધક વર્ણન, કૃષ્ણક બ્રજાંગનાક મનઃસ્થિતિક વર્ણન આ' ગોપવાલાક ઔત્સુક્ય આદિ એહને વર્ણનાત્મકતા પ્રતિપાદિત અછિ। કૃષ્ણજન્મક અનેક અભિલેખમે એકર નામ "હરિચરિત" સેહો ભેટૈત અછિ, જે પ્રાયઃ એહિ પોથીક તુલનાત્મક રૂપેં ઉપયુક્ત શીર્ષક બુઝાઇત અછિ।

કૃષ્ણજન્મક ભાષા

કૃષ્ણજન્મક ભાષામૂલક મહત્વક પ્રસંગ ડા. જાર્જ અબ્રાહમ ગ્રિયર્સનક કહબ અનિ-

"ઈ કાવ્ય ભાષાક દૃષ્ટિએ વિશેષ અવલોકનીય અછિ, કારણ જે ઈ ગત શતાબ્દી (19મ શતાબ્દી) ક મૈથિલીક સ્વરૂપ નિદર્શિત કરૈત અછિ, જે વિદ્યાપતિક પ્રાચીન મૈથિલી આઓર હર્ષનાથ આદિક વર્તમાન લેખકક આધુનિક મૈથિલીક બીચ કડીક કાજ કરૈત અછિ। એહિમે કતોક એહનો ભાષાક રૂપ અછિ જે વિદ્યાપતિહુક કાલસં પહિનહિસં ચલૈત આબિ રહલ અછિ આ'તે વિશેષ મહત્વપૂર્ણ ભાગેલ અછિ।"¹¹

યદ્યપિ કિછુ આલોચકકેં મનબોધક ભાષા અત્યંત શુદ્ધ વાક્ય ઓ શબ્દ-વિન્યાસ અત્યંત રુચિગર આ' કટગર બુઝાઇત અનિ; મુદા કિછુ આલોચક હિનક ભાષાકેં ઠેંઠ ગમૈયા ભાષા બુઝૈત અછિ। મનબોધ અપન

भाषाकें गमैया बनेबाक फेरिमे वृक्षकें ब्रिच्छ,
वृत्तान्तकें विरतान्त आ' तृणकें त्रिण लिखए लगलाह;
जाहिसँ हिनक भाषामे कृत्रिमता आबि गेल। वस्तुतः
तत्समक दुर्गम -दुरूह गिरिप्रांतरसँ भाषा-सरिताकें
तद्भवक समतल भूखण्डपर उतारबाक समस्त श्रेय
मनबोधकें छनि। मनबोधक काव्यमे स्थान-स्थानपर
सूक्ति आदिक प्रयोग सोनमे सुगंधिक काज करैत
अछि। मनबोधक विषयमे इएह कहल जा सकैछ जे
काव्यक क्षेत्रमे नब रूपक काव्य-परम्पराक सूत्रपात ई
कएलनि।¹² काव्यकें राग-तालसँ मुक्त राखि ओकरा
नब स्वरूप प्रदान कएलनि। मनबोध एकटा जनकवि
छलाह। तँ अपन 'कृष्णजन्म'कें विशुद्ध लोकभाषामे
शृंगारसँ शून्य, भक्तिरसपूर्ण, छन्दमे राग-ताल-लय
समन्वित एकटा नबीन शैलीक रचना कएलनि। ओहि
समय राग'क नाम प्रचलित छल। मात्र एकहिटा
छन्दमे रचित समस्त महाकाव्य-शैलीक मैथिलीमे ई
प्रथमे ग्रन्थ थिक।

मनबोधकें भाषाकवि कहल जाइत छनि। कृष्णजन्ममे
जाहि भाषाक प्रयोग कएल गेल अछि तकरा
निस्संदेह लोकभाषा कहल जाए सकैछ। तत्कालीन
साहित्यक संस्कृत आ' अवहट्ट, जे संयुक्ताक्षरक
प्रयोगक कारणेँ कर्णकटु प्रतीत होमय लागल छल, से
घसि कए कोमल उच्चारणक संग मजि-चिकनाए,
लोककण्ठक अनुकूल बनि गेल अछि; जेना- कुमारी>
कुम्भरि>कुमरि; हस्ती>हथी>हाथी;
अर्जुन>>अज्जुन>अरजुन; दुग्ध>दुद्ध>दूध;
कार्य>कज्ज>काज; दर्प>दप्प>दाप आदि।¹³ द्रष्टव्य
थिक निम्न पाँती जाहिमे बाल कृष्णक चित्र सहज,
सरल आ' लोकभाषामे कवि कतेक स्पष्ट रूपेँ चित्रित
कएने छथि-

"कतओक दिवस जखन बिति गेल, हरि पुनि हथगर
गोलर भेल।

से कोन ठाम जतए नहि जाथि, कय बेरि अंगनहुँसँ
बहराथि।

द्वारि उपरिसँ धरि-धरि आनी, हरखथि, हँसथि
जसोमति रानी।

कए बेरि आगि हाथसँ छीनु, कए बेरि पकला -तकला
बीनु।

कए बेरि साप धरए पुनि जाथि, कए बेरि चून दही
बदि खाथि।

कौशल चलथि मारिकहुँ चालि, जसोमतिकौ भेल
जिबक जंजाल।"¹⁴

उपर्युक्त पदकें नेनाक स्वाभाविक विकासक
निर्देशमे, उत्तम कोटिमे राखल जा सकैछ। मनबोध
भक्त कवि छलाह आ' तँ अपन उपास्यक गुणगान
करब आवश्यक बुझलनि। हिनक कृष्णजन्म
मैथिलीक आदि प्रबंधकाव्य थिक। कविक प्रधान रूप
काव्य-प्रणेताक नहि, अपितु एकटा भक्तक छनि।
कृष्णक अलौकिक रूपक प्रति हुनक महान् श्रद्धा
छनि, आ' तँ कृष्णक बाल-वर्णनमे अपन उपास्य
"कौशल"कें नहि बिसरलाह। मनबोध अपन भाव,
भाषा, शिल्प ओ शैली सभ दृष्टिँ मैथिली साहित्यमे
नबीनता अनलनि। शृंगारकें छोडि भक्ति, गीतकें
छोडि चौपाइक भाषा सर्वथा लोकभाषा आ' शैलीमे
वर्णन कएलनि। मनबोधक सभसँ पैघ विशेषता
विषय संबंधी अछि। विद्यापतिसँ ल' समस्त
मध्यकाल जतए शृंगाररससँ सराबोर छल, ओतए
मनबोध पवित्र भावसँ कृष्णक चरित्रक वर्णन
कएलनि। जँ रासलीला वा विरह दशाक वर्णन भेबो
कएल, तथापि शैली शृंगारमय नहि रहल। एतबे
नहि, कवि ब्रजांगनाक विरह व्यथित स्थितिक वर्णन
सेहो अत्यन्त मर्यादित भाषामे कएलनि अछि।

मनबोधक कृष्णजन्ममे मैथिली लोकोक्ति
आ' मोहाबराक प्रयोग सेहो पर्याप्त संख्यामे भेटैत

अछि, जेना- लाजक लेल मुख हेलो ने जाए, एहिसँ सुखद साप बरु खाय, जुडाएल कान, विधाता बंक आदि। हिनक समस्त काव्यमे बाभन पोथी छतरी तीर, नेरु हरएने जेहने धेनु गाय आदि-आदि कहबीसभ काव्यमे सजीवता आ जीवन्तता आनि देने अछि। तत्कालीन चिन्तनकें कतहु व्यंगसँ तँ कतहु कटाक्षसँ उभारल गेल अछि। इएह कारण अछि जे कृष्णजन्म मिथिलामे अत्यन्त लोकप्रिय भेल। मैथिली साहित्यक परम्परामे राधा-कृष्णकें प्रतीक मानि मैथिल युवक-युवतीक प्रेम-प्रसंगकें दर्शाओल गेल अछि, जाहिमे युवावस्थसँ उन्नत नायक कृष्ण आ यौवन-मदिरासँ मातलि नायिका राधाक चित्रणांकण कएल गेल अछि। मुदा मनबोध अपन काव्यमे यशोदाक माध्यमे मातृरूप केर सहज वात्सल्यक मर्मस्पर्शी चित्रण क' कें सात्विक भावक कारणेँ जनजनकें मुग्ध क' देलनि। संगहि ई सूरदासे जकाँ बालकृष्णक बाल रूप ओ बाल लीलाक सहज, स्वाभाविक तथा अति मनोवैज्ञानिक चित्रण क' कए श्रोता-पाठककें विभोर क' दैत छथि। तँ मनबोधकें वैष्णव भक्ति कवि सेहो कहल गेल अछि।

रसाभिव्यक्तिक दृष्टिँ कृष्णजन्मकें रसप्रधान काव्य नहि कहल जा सकैछ। महाकाव्यक लक्षणक मोताबिक ओहिमे शृंगार, वीर, ओ शान्तमे सँ कोनो रस प्रधान होअए आ आन रस अंगी रूपमे रहए। मुदा मनबोधक कृष्णजन्ममे एहिमे सँ कोनो रसक प्रधानता नहि अछि। जँ कोनो रस अछि तँ ओ थिक अद्भुत रस। गोपीसभक संग जँ कखनो शृंगार रसक उद्भावना कएलो गेल तँ ओहिमे भक्तिभावे उत्पन्न भेल। कृष्णक अलौकिक लीलाक कारणेँ जरासंधक संग कृष्णक शौर्य सेहो प्रदर्शित नहि भेल। तँ वीर रसोक अभावे अछि। मूलतः एहिमे वात्सल्य आ भक्तिरस सएह भेटैत अछि। समस्त काव्यमे मिथिलामे प्रचलित लोकव्यवहार, संस्कृति, रहन-

सहन, खान-पान, पहिरन-ओढन आदिक चित्रण कवि अत्यन्त उत्कृष्ट रीतिँ कएलनि अछि।

उपसंहार

महाकवि मनबोध मैथिली साहित्यक युगान्तकारी कवि छलाह। हिनक कृष्णजन्म द्वारा मैथिली कृष्ण-काव्यमे नब दृष्टिक उन्मेष होइछ। हिनक काव्य मात्र एहि लेल नब नहि अछि जे ई प्रचलित गीतसभकें छोडि विशुद्ध लोकभाषामे शृंगार शून्य, एकटा नबीन शैलीमे रचना कएलनि, एहि मध्य कृष्णक जाहि प्रकृति-प्रेमीक चित्रांकन कएल जाए रहल छल ताहि दिसिसँ ध्यान हटाए मनबोध हुनक एकटा नब मूर्ति गढलनि। विद्यापतिक प्रणय पिपासु नायक कृष्ण मनबोधक काव्यमे सामाजिक जीवनक अभिन्न अंग बनि प्रकट होइत छथि। मनबोधक कृष्णकें मानिनि राधिकाक जतेक चिन्ता नहि छनि, रुसल प्रेमीकें परबोधबाक उद्दिग्रता नहि छनि ततेक व्यग्रता छनि पापी आ दुराचारीक संहारक, संसारक भार ग्रहण करबाक। धरनीपर कृष्णावतारक मूल रहस्यो सएह छल। वासुदेव कृष्ण गोकुल जाए नबजात कृष्णकें घोर निद्राभिभूत यशोदाक पार्श्वमे सुताए अएलथिन। यशोदाक जखन नीन टुटलनि तँ कृष्णकें देखि 'मनभरि रंक रतन भरि लूट'। यशोदाक प्रसन्नताक ई वर्णन संसार भरिक माताक वात्सल्यपूर्ण हृदयकें प्रतिच्छवित करैछ। पूतनाबधक समय कवि 'जसोमति'क जाहि विकलताक वर्णन कएने छथि, ओ सर्वथा मातृ भावनाक बोधक थिक। यमलार्जुनक उद्धार कालमे कृष्णकें आंगनमे नहि पाबि यशोदाक मनोदशाक मार्मिक अभिव्यक्ति कवि "नेरु हरेने जेहने धेनु गाय" एहि एक पाँतीमे भरि देने छथि।¹⁵

एहि वात्सल्य धारामे निमज्जित बालकृष्णक भव्यरूप मनबोधक काव्य कृतिक स्थायी सम्पदा

थिक। कृष्ण जखन सयान होइत छथि, ब्रजक सामान्य बालकक रूपमे अपन क्रीडारत जीवन बितबैत छथि, समाजक समस्त शोक-संताप हरि लैत छथि। स्पष्टतः ई कहल जा सकैछ जे मनबोधक महत्व मैथिली भाषा ओ साहित्यमे युगान्तकारी अछि।

संदर्भ सूची

- [1] झा डा. विजयेन्द्र; 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल) ISBN: 978-93-95216-98-2, मुजप्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 644
- [2] ओएह, पृ. 644-645
- [3] ओएह, पृ. 667
- [4] ओएह, पृ. 648
- [5] उद्यान किरण (आलेख- कृष्णजन्म महाकाव्यक रचयिताक संबंधमे नवीन दृष्टिकोण, डा. जयानन्द मिश्र, पंजीकार)-- सं. लखनजी 'स्थितप्रज्ञ', अंक 8 एवं 9; 9 अप्रैल, 2020 एवं 2021, संयुक्तांक, किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान, धर्मपुर, उजान, लोहना रोड, दरभंगा, पृ. 51-52
- [6] मिश्र डा. जयकान्त; 1988, मैथिली साहित्यक इतिहास, नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी
- [7] उद्यान किरण (आलेख- कृष्णजन्म महाकाव्यक रचयिताक संबंधमे नवीन दृष्टिकोण, डा. जयानन्द मिश्र, पंजीकार)-- सं. लखनजी 'स्थितप्रज्ञ', अंक 8 एवं 9; 9 अप्रैल, 2020 एवं 2021, संयुक्तांक, किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान, धर्मपुर, उजान, लोहना रोड, दरभंगा, पृ. 51-52
- [8] ओएह, पृ. 51-52
- [9] झा डा. विजयेन्द्र; 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास(आदिकाल आ' मध्यकाल), ISBN: 978-93-95216-98-2, मुजप्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 649
- [10] 'श्रीश' डा. दुर्गानाथ झा ; 1968, मैथिली साहित्यक इतिहास, परिवर्धित संस्करण 1977/83/91, दरभंगा: भारती पुस्तक केन्द्र पृ. 78
- [11] उद्धृत: झा, डा. विजयेन्द्र; 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल), ISBN: 978-93-95216-98-2, मुजप्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 650-651
- [12] 'व्यथित' डा. बालगोविन्द झा; 1988 (द्वितीय संस्करण) मैथिली साहित्यक इतिहास, दरभंगा: मिथिलांचल प्रकाशन, पृ. 105
- [13] झा डा. विजयेन्द्र; 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास(आदिकाल आ' मध्यकाल), ISBN: 978-93-95216-98-2, मुजप्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 652
- [14] मनबोध, कृष्णजन्म, अध्याय-3; उद्धृत: झा डा. विजयेन्द्र; 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल), ISBN: 978-93-95216-98-2, मुजप्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 652